मुक्त चर्चा

सभी बच्चे अपनी ज़िन्दगी के बारे में बात करने को बहुत उत्सुक रहते है|.उन्हें न केवल उन घटनाओं के बारे में बताना अच्छा लगता है जो उनके साथ हुई हैं , बल्कि उसके बारे में जो अभी तक घटित ही नहीं हुआ| ज़रुरत है तो उन्हें प्रोत्साहन देने की| एक शिक्षक के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वह कक्षा में बच्चों को अपने अनुभव सबके सामने बताने के लिए उचित अवसर दे|

मुक्त चर्चा क्यों?

मुक्त चर्चा बच्चों को खुल कर बोलने का आत्मविश्वास भी देती हैं| दरसल जब हम बच्चों को इन चर्चाओं के माध्यम से बेझिझक अपनी बात, अपने विचार बताने का मौका देते हैं, तो उनका कक्षा में बोलने के प्रति डर समाप्त हो जाता है| वे बोलने में सहज महसूस करने लगते हैं| वे निश्चिन्त हो जाते हैं कि उनकी बात सुन कर न तो शिक्षक उन्हें डांटेंगे, और न ही दूसरे बच्चे उनका मज़ाक उड़ायेंगे| यही माहौल जो बच्चों को खुल कर बोलने के लिए, एक दूसरे की बातों को सुन कर प्रतिक्रिया देने के लिए या अपना मत बताने के लिए प्रेरित करे आगे की अनेकों चर्चाओं के लिए एक मज़बूत नीव तैयार करता है|

मुक्त चर्चा के लिए क्या करें?

आइये पहले नीचे दी गयी एक कक्षा का दृश्य देखें:

सब बच्चे कक्षा में बैठे बातें कर हैं| शिक्षक के आने से पहले का यह समय केवल उनका अपना है| तभी शिक्षिका ने कक्षा में प्रवेश किया परन्तु किसी को पता नहीं चला| लगभग सभी बच्चे बातों में व्यस्त हैं|

सीमा: पता है, कल मेरी चाची गाँव से आई. बहुत मज़ा आया. वो मेरे लिए बहुत सुंदर नए खिलौने भी लायी हैं .

रोहित (उत्साहित होते हुए) : अच्छा! वो तुम्हारे लिए क्या लाई ?

सीमा: एक बहुत सुन्दर.....

शिक्षिका ने पूरी कक्षा की ओर नज़र घुमाई, सीमा और बाकी बच्चों को गौर से देखते हुए ऊँची आवाज़ में कहा " *चलो, जल्दी से अपनी हिंदी की किताब निकालो, आज हम पाठ 6 पढेंगे.*"

बच्चों की बातें वहीँ रुक गईं और हिंदी की कक्षा प्रारंभ हो गयी| शिक्षिका ने बच्चों के साथ एक बढ़िया विषय पर बातचीत बढाने का मौका खो दिया| कैसे?

आइये अब ऐसी ही एक दूसरी कक्षा में हो रही बातचीत सुनें|

ज़रा सोचिये इन दोनों दृश्यों में आप को क्या अंतर नज़र आया?

बातचीत की शुरुवात

कई शिक्षक बच्चों की व्यक्तिगत जिंदगी और स्कूल की पढाई के बीच कोई सम्बन्ध नहीं देख पाते| वे इस बात पर जोर देते हैं कि सिर्फ पाठ्यपुस्तकों में दिए गए विषयों पर ही चर्चा होनी चाहिए| इसके अलावा बहुत से शिक्षकों को यह समझने में भी दिक्कत होती है कि आखिर किन विषयों पर बच्चों से बात की जाए? चर्चा शुरू कैसे की जाए? अधिक बातचीत न होने की वजह से कई बच्चे कक्षा में किसी भी किस्म की हिस्सेदारी नहीं निभा पाते| ऐसी स्थिति बच्चों को पाठ्क्रम से एकदम काट देती है| आइये विस्तार से देखें कि बच्चों के साथ किन किन विषयों पर चर्चा की जा सकती है:

बच्चों के अनुभवों पर चर्चा

आप उनसे उनके अलग अलग अनुभव पूछ सकते हैं, जैसे:

- तुम ने कल छुट्टी के दिन सबसे मज़ेदार क्या किया?
- क्या तुम ने कभी ___ देखा है? / क्या तुम ने कभी ___ किया है?
- तुम्हें स्कूल में सबसे अच्छा क्या लगता है? क्यों?
- क्या तुम्हारी अपने भाई / बहिन से लड़ाई होती है? फिर क्या करते हो?
- शाम को कौन कौन से खेल खेलते हो ?

किसी विशेष घटना का वर्णन

आप उनसे उनके जीवन से जुड़ी विशेष घटनाओं पर चर्चा कर सकते हैं, जैसे:

- कल इतनी तेज़ बारिश / तूफ़ान/ में क्या किया तुम सब ने?
- कल जब सारा दिन बिजली नहीं थी, तो शाम को क्या किया?
- इस बार दिवाली कैसे मनाई?
- गर्मी की छुट्टियों में क्या क्या किया?
- तुमने अपना जन्मदिन कैसे मनाया?

भविष्य की अघटित घटनाओं पर चर्चा

आप उनसे उनके भविष्य की कुछ योजनाओं पर चर्चा कर सकते हैं, जैसे:

- अगले साल तुम कहाँ घूमने जाना चाहोगे?
- इस बार की छुट्टियों में तुम सब क्या करोगे ?
- बड़े हो कर तुम क्या बनना चाहते हो? क्यों?

देखी गयी चीज़ का वर्णन

बच्चों ने अपने आस पास जो चीज़ें देखी हैं, उस पर चर्चा कर सकते हैं, जैसे:

- तुम्हारे घर के पास जो हैंडपंप / पेड़ / दुकान / झूला आदि है, उसके बारे में कुछ बताओ| उसकी खासियत क्या है? उसका उपयोग तुम कैसे करते हो ?
- कमरे के बाहर जाओ और आस पास देखो| तुम्हे क्या क्या दिखा, उसके बारे में 5 वाक्य बताओ|
- तुमने क्या साइकिल ठीक करने वाले को देखा है? वह क्या क्या करता है?

किसी चीज़ को बनाने की प्रक्रिया

इस प्रकार की बातचीत का बहुत अच्छा समय होता है जब बच्चे खाना खा रहे हों| आप उनसे किसी भी व्यंजन के बनाने की विधि पर चर्चा कर सकते हैं, जैसे:

- तुम में से किस किस को बेसन का लड्डू / रोटी / सब्जी / चावल / चाय / चटनी पसंद है? मालूम है वो कैसे बनते हैं? इसके लिए क्या क्या सामान चाहिए?
- पुराने अखबार / प्लास्टिक की बोतल/ गत्ते के डिब्बे आदि से घर सजाने के लिए क्या क्या बना सकते हैं? कैसे बनाएँगे?
- कक्षा में जो दरी रखी है, वो कैसे बनती होगी आदि

ज्ञानवर्धक चर्चा

बच्चों में नयी नयी चीज़ों के बारे में जानने की जिज्ञासा हमेशा ही बनी रहती है| वे प्राकृतिक तौर पर नया ज्ञान अर्जित करने की कोशिश करते रहते हैं—चाहे वो किसी जानवर के बारे में कोई जानकारी हो या कोई नयी तकनीक| यह उनको आस पास दिखने वाली चीज़ों को बेहतर समझने में भी मदद करता है| आप उनसे कई पूछ सकते हैं, जैसे:

- क्या तुम जानते हो कि तुम अपने घर से जो कचरा बाहर फ़ेंक देते हो, उसका क्या होता है?
- तुम चाय / दूध चीनी वाला पीते हो न ? कभी सोचा है कि चीनी कहाँ से आती है ? कैसे बनती है?
- हम जानते हैं कि जानवर पौधे खाते हैं, कभी पौधों को जानवर खाते सुना है?

आइये यहाँ दिए गए इस वीडियो में देखें किस प्रकार शिक्षिका बच्चों के जीवन के साथ जोड़ते हुए 'कचरे' पर चर्चा कर रही हैं| https://youtu.be/9RhwUzDlMSo. इस प्रकार की चर्चा करने से पहले अपनी पूर्व तयारी ज़रूर कर लें| ज़रा सोचिये, 'कचरे' पर चर्चा करने से पहले, शिक्षिका ने उसके बारे में क्या क्या जानकारी ली होगी?

बातचीत को आगे बढ़ाना

बच्चों के साथ हो रही चर्चा को आगे बढाने के लिए आप दो मुख्य कार्य कर सकते हैं :

1. **बच्चों के जवाब से ही बातचीत आगे बढाएं** . उदाहरण के लिए- जब बच्चा यह बताए कि उसकी चाची उसके लिए कठपुतली लायीं हैं, तो शिक्षक बात बढाते हुए कठपुतली कहाँ मिलती है, कैसे बनती है, उसके साथ क्या क्या खेल खेले जा सकते हैं आदि कई दिशाओं में चर्चा को आगे ले कर जा सकते हैं|

2. **चर्चा के विषय से जुड़ा एक और विषय ले लें**. उदाहरण के लिए- अगर बच्चों से बेसन के लड्डू बनाने की विधि पर चर्चा हो रही हो, तो उसके बाद आप चर्चा आगे बढ़ने के लिए कह सकते हैं “बेसन के लड्डू तो सबको अच्छे लगते हैं! क्या तुम लोग बेसन की ऐसी भी कोई ऐसी स्वादिष्ट चीज़ खाते हो जो मीठी न हो, नमकीन हो ?”

एक बार बच्चों से चर्चा शुरू कर दें, तो उसे आगे बढाने में अधिक दिक्कत नहीं होती| बच्चे स्वयं ही बढ़ चढ़ कर चीज़ों को काफी विस्तार से बताना पसंद करते हैं बशर्ते कि **कक्षा का माहौल बच्चों के अनुकूल हो और इस प्रकार की चर्चाएं कक्षा में नियमित तौर पर होती हों**|

प्र: सोचें और बताएं कि आप इस प्रकार की चर्चाओं को पाठ्यपुस्तक से कैसे जोड़ सकते हैं?